Good wishes of high intensity reflects in actions
शुभ कामनाओ की कर्मो में झलक

शुभ कामनाओ के महासमुन्द्र में कई महीनो से तैरते हुए मुझे ये अपने इतना करीब ले आयी है कि इन्हे और नजदीक से समझने का अवसर कहो, सौभाग्य कहो मुझे इन्होने दिया है। वस्तुत: ये शुभ भावनाऐ, शुभ कामनाऐ ही हमारी सच्ची साथी है। दोस्त होने के नाते ये 5000 वर्ष तक हमारा अनवरत साथ देती है। सम्पत्ति होने के नाते पूरा ही कल्प ये हमारे काम आती है। ये हमारी ही है। ये हमारे लिए ही है क्योंकि अध्यात्म के पथिक कि आन्तरिक शक्तियों का ये सार है। अध्यात्म के राही के पुरुषार्थ का ये परिणाम है। इनकी तीव्रता ही इनकी शक्ति है जब ये अपनी उच्च तीव्रता लिए हुए होती है तब ये कर्मो में साफ झलकती है, संसार के धरातल पर हन्हें रुप लेते आसानी से देखा जा सकता है। इनका यह उच्च तीव्रता से सम्पन्न रुप ही व्यक्ति को उसकी शक्तियों का स्पष्ट बोध कराता है।

संसार में निमार्ण की प्रक्रिया को यदि हम देखें तो यह सूक्ष्म से स्थूल की यात्रा है। हमारे चहुँ ओर जो भी है चाहे वह व्यक्तिगत है अथवा सामुहिक है, वह या तो हमारे प्रयासो का परिणाम है अथवा सूक्ष्मात्तिसूक्ष्म घटित हो रही क्रियाओ का परिणाम है। उच्च तीव्रता से सम्पन्न हमारी शुभ कामनाएं हमारी आन्तरिक शक्तियों को जाग्रत कर उनसे कार्य कराती है। ये शुभ कामना की शक्ति अपनी उच्च तीव्रता के कारण आन्तरिक जगत के साथ- साथ सम्बन्धित व्यक्तियों के भी आन्तरिक जगत को प्रभावित कर उन्हे भी उस कार्य को साकार रुप देने में सहयोगी बना लेती है। अपनी इसी उच्च तीव्रता के कारण ये शुभ कामनाएं समय को अपनी अनुकूलता में ढ़ाल लेती है। प्रकृति को अपने प्रभाव से लाभान्वित कर सहयोगी बना लेती है। आत्म रुप में स्थित हुआ व्यक्ति ऐसी उच्च तीव्रता वाली शुभ कामनाओं पर भी नियन्त्रण बनाने की क्षमता विकसित कर लेता है। ऐसा इसलिए आवश्यक हो जाता है। ताकि इस बेजोड़ शक्ति का पूर्ण सदुपयोग हो सके।

कई बार ये उच्च तीव्रता वाली शुभ भावनाएं, शुभ कामनाए जब साकार रुप में अपनी आकृति ले रही होती है तो समाज में फैली विकृति समय, प्रकृति अथवा व्यक्ति को अधीन कर इनका अवरोध करती है। यह अवरोध अनावश्यक रुप से टकराव का वातावरण निर्मित करता है। ऐसे में ज्ञानी जन अपने आत्मरुप में स्थित होने के कारण समय की नाजुकता को भाप लेते है। ये उच्च तीव्रता वाली भावनाएं आहत हो अपनी तीव्रता को न खो बैठे इसलिए वे इन पर नियन्त्रण की स्थिति को अपनाते है। उनके ऐसे आवश्यक कदम से ये शुभ भावनाए, शुभ कामनाएं आहत हुए बिना अपनी उच्च तीव्रता को अपने में बनाये रखती है। आत्म रुप में स्थित हुए योगी जन हालातो के अनूकूल होते ही इन्हें इनका साकार रुप लेने के लिए क्रियान्वयन की स्थिति में चले जाते हैं। ऐसे अनुभवी आत्मनिष्ट ज्ञानी, योगी जन ही उच्च तीव्रता वाली शुभ कामनाओं को उनके साकार रुप तक ले जाते है। ये शुभ कामनाए उच्च तीव्रता से सम्पन्न शक्ति अपने में समाये हुए होती है। योगी जन तो मात्र इन्हे सुरक्षित बनाये रखते हुए उपयोगी बनाते है।

यह समाज वृहद है इसकी रचना वृहद है। यह न केवल हमसे है, न किसी विशेष से है। यह सवसे है, सबके लिए है। इसलिए इसकी सुरक्षा करना इसका विकास करना ये हम सभी का दायित्व है। जब हम देखते है किसी व्यक्ति की उच्च तीव्रता से सम्पन्न भावनाए कार्य कर रही है। वह कार्य हमारे से जुड़ा हो सकता है। अथवा बेहद मे हो सकता है। ऐसे में हमारा का दायित्व हो जाता है कि हम ऐसे लोगों की भवनाओ को आहत न करे, उनकी भावनाओ से खिलवाड न करे। ऐसी स्थिति में यदि वे व्यक्ति अपनी भावनाओ पर नियन्त्रण बनाये रखने की स्थिति में नही है तो उनकी भवनाए आहत हो अपनी तीव्रता को गवॉ बैठेगी। ऐसा होने से उनकी आध्यात्मिक ऊर्जा का क्षय होगा

और संसार, समुदाय अथवा व्यक्ति लाभान्वित होने से वंचित रह जाएगा। यदि कोई व्यक्ति शुभ चिन्तक होने के नाते अपनी बात हमें देता है अथवा हमारी तरफ सहयोग का हाथ बढ़ाता है तो हमें समझ लेना चाहिये इसके पीछे उसकी उच्च तीव्रता से सम्पन्न भावनाएं कार्य कर रही है। ऐसे में यदि हम किसी के सहयोग की उपेक्षा करते है तो समझ लेना चाहिये हम उनकी भावनाओ की उपेक्षा कर रहे हैं। इन भावनाओ के संवाहक प्रेम की हम उपेक्षा कर रहें है।

संसार में जब कोई व्यक्ति उपेक्षित होता है। तो उसका दर्द असहनीय होता है। किसी की भावनाओ के पीछे छिपे प्रेम को आहत कर जब कोई किसी को दर्द देता है तो वह दुआओं से वंचित हो जाता है। अपरोक्ष रुप से ऐसा कर व्यक्ति दर्द दे अपने लिए दर्द का आमन्त्रण देता है। अत: व्यक्ति को चाहिये कि वह उन लोगो की भावनाओ को समझे जिन्होने उनकी तरफ सहयोग का हाथ बढ़ाया है। हो सकता है हम अपने आप में पूर्ण सक्षम हो, अपने विकास के लिए हम अपने पर पूर्ण रुप से निर्भर हो, अपने हिसाब से अपने को आगे बढ़ाने के लिए अथवा अपने ढ़ग से जीने के लिए, अपनी स्वतन्त्रता को बनाये रखने के लिए हम सचेत हो। तो भी हमें उनकी अनदेखी नही करनी चाहिये जिन्होने हमारी तरफ सहयोग का हाथ बढ़ाया है। यदि फिर भी हम अनदेखी करते है तो हमें समझ लेना चाहिये हम अपने अभिमान को पल्लवित कर रहे हैं। यह अभिमान हमारी भावनाओ को दूषित करता है, कमजोर करता है और परिणाम के रुप में 5000 वर्षो के लिए हमें दुर भावनाओ के रुप में ऐसा दोस्त दे जाता है जो पूरा ही कल्प हमें दु:ख दर्द के रुप में अपने साथ जकड़े रखता है।

हमें चाहिये हम जागें, उठे- वक्त की नजाकत को पहचाने, झुक कर भी किसी की उन उच्च तीव्रता वाली भावनाओ का सम्मान करें जो बार-बार हमारी तरफ सहयोग का हाथ बढ़ा रही है। यदि हम ऐसा नहीं भी करते है। तो भी ये उच्च तीव्रता वाली शुभ भावनाएं अपना साकार रुप ले ही लेती है ये कर्मो में अपनी झलक दिखाती ही है।

वे महान है जिन्हे ऐसी उच्च तीव्रता से सम्पन्न शुभ भावनाए ईश्वर से विरासत में मिली है। वस्तुत: तो ये हमारे अध्यात्म जगत को ध्यान में रख किये गये पुरुषार्थ का ही परिणाम है। ये सदा यू ही अमर रहे, अपनी उच्च तीव्रता को बनाये रखे, कर्मो में अपनी झलक दिखाती रहे, साकार जगत में अपना रुप धारण करती जाएं इसके लिए हमें चाहिये हम हर हालात मे अपनी भावनाओ मे उच्चता को बनाये रखे, असहयोग करने वालो के प्रति भी सहयोग बनाये रखे। प्रेम को उपहार के बदले कमजोरी समझने वालो से भी प्रेम बनाए रखे। हिम्मत हीन लोगों के सामने पुरुषार्थ को बनाये रख कर उनमें भी उम्मीद की किरण जगाये। लक्ष्यों के प्रति जिद्दी न हो अपने पुरुषार्थ और कर्म को प्राथमिक्ता दे उसकी गती को बनाये रखे। जीवन में सावधानी भरे कदम उठाकर अपनी शभ भावनाओ शुभ कामनाओ की उच्च तीव्रता को प्रभावित किये बिना उन्हे अमली जामा पहनाते आगे बढ़ते जाये। ओम शान्ति-----शान्ति-----शान्ति---।

बी.के सुधीर कुमार